

News item/letter/article/editorial published on May-14.05.2015 in the

Hindustan Times
Statesman
The Times of India (N.D.)
Indian Express
Tribune
Hindustan (Hindi)

Nav Bharat Times (Hindi)
Punjab Keshari (Hindi) ✓
The Hindu
Rajasthan Patrika (Hindi)
Deccan Chronicle
Deccan Herald

M.P.Chronicle
A a j (Hindi)
Indian Nation
Nai Duniya (Hindi)
The Times of India (A)
Blitz

and documented at Bhagirath(English)& Publicity Section, CWC.

जापान में भूकंप के तेज झटके

टोक्यो, (रायटर): पूर्वोत्तर जापान में आज भूकंप के तेज झटके महसूस किए गए। चार साल पहले आए भूकंप में बहुत कुछ तबाह हो गया था लेकिन आज किसी के जानमाल के नुकसान की खबर नहीं है और न ही सुनामी या और किसी अन्य खतरे की सूचना जारी की गई है। अमरीकी भू-वैज्ञानिक सर्वेक्षण के अनुसार इसकी तीव्रता 6.8 और एनएचके लोक प्रसारण के अनुसार इसकी तीव्रता 6.9 मापी गई। भूकंप का केन्द्र जापान से 119 किलोमीटर दूर दक्षिण-पूर्व से 39 किलोमीटर नीचे था। एनएचके हेलीकाप्टर ने भूकंप क्षेत्रों का हवाई निरीक्षण किया और स्थिति का जायजा लिया। भूकंप में किसी के घायल या हताहत होने की कोई खबर नहीं है। एक इलेक्ट्रिक पावर कंपनी के प्रवक्ता ने बताया कि ओगावा के परमाणु संयंत्र में कोई हलचल देखने को नहीं मिली और शिकन क्षेत्र में बुलेट ट्रेनों की जांच की गई है।

पंजाब-14-5-15



News item/letter/article/editorial published on May-14-05-2015 in the

Hindustan Times
Statesman
The Times of India (N.D.)
Indian Express
Tribune
Hindustan (Hindi)

Nav Bharat Times (Hindi)
Punjab Keshari (Hindi)
The Hindu
Rajasthan Patrika (Hindi)
Deccan Chronicle
Deccan Herald

M.P.Chronicle
A a j (Hindi)
Indian Nation
Nai Duniya (Hindi)
The Times of India (A)
Blitz

and documented at Bhagirath(English) & Publicity Section, CWC.

फिर हिली धरती

पच्चीस अप्रैल के भयावह भूकंप के बाद जिंदगी धीरे-धीरे सामान्य हो ही रही थी कि रिक्टर पैमाने पर 6.8 तीव्रता वाला दूसरा भूचाल आ गया, जिसका केंद्र एवरेस्ट के निकट नामचे रहा और जिसने नेपाल, भारत और बांग्लादेश के लाखों लोगों को भयाक्रांत कर दिया। मीडिया के मुताबिक, दूर-दूर तक, भारत में दिल्ली और उसके आस-पास के क्षेत्रों तथा बांग्लादेश में ढाका व उसके करीबी इलाकों तक भूकंप के झटके महसूस किए गए। 19 दिनों में दूसरी बड़ी तीव्रता वाला यह भूकंप था और इसके आने के कुछ घंटों के अंदर ही नेपाल में 37 लोगों के मरने की पुष्टि की गई। राजधानी में करीब 1,100 घायल लोगों को कई अस्पतालों में भर्ती कराया गया। झटके पूर्वी तराई इलाके में भी महसूस किए गए। ऐसी सूचना है कि पुराने घरों और मंदिरों की, जिनमें जनकपुर का राम-जानकी मंदिर प्रमुख है, दीवारों में भी दरारें आ गई हैं। नामचे में भूकंप का केंद्र जमीन की

The Himalayan

सतह से 18.5 किलोमीटर नीचे था। 25 अप्रैल के भूकंप का केंद्र गोरखा जिले का बारपक था और यह जमीन की सतह से 15.5 किलोमीटर नीचे था। जानकारों की राय है कि यह कहना गलत है कि निकट भविष्य में ऐसे भूकंप नहीं आएंगे। भूकंप-विज्ञानी यह बार-बार बता रहे हैं कि कोई बड़ा भूकंप नहीं आएगा, क्योंकि कई सारे ऑफ्टर शॉक बड़े भूकंप को आने से रोकेंगे। वैसे, परसों के भूकंप ने फिर से जनता के विश्वास को हिलाने का काम किया है और वे पहले से अधिक घबराए हुए हैं। दक्षिण एशिया के बड़े हिस्से में आए इस दूसरे बड़े भूकंप के तुरंत बाद सरकार ने सुरक्षा बलों को सतर्क किया और डोलाखा, सिंधुपलचौक, रामेछाप, सिंधुली व सोलुकुंभ जैसे इलाकों का हेलिकॉप्टर से मुआयना कराया गया, ताकि जमीनी हालात का पता चल सके। पहले के भूकंप से सबक सीखते हुए नेपाल सरकार ने प्रभावित इलाकों में बचाव व राहत काम तेज किए। यह तो साफ है कि पुनर्निर्माण व पुनर्वास जैसे कामों के लिए अंतरराष्ट्रीय मदद पहुंचाने में समय लगेगा, तब तक सरकार के पास जो संसाधन हैं, उनका सही इस्तेमाल किया जाना चाहिए। जो बजट और फंड हैं, उनको इस आपदा में लगाने होंगे।

द हिमालयन टाइम्स, नेपाल

दि-14-5-15

नालों में बह रहा धरती के हक का पानी

दावों की
पोल खोलती
हकीकत

जेडीए व नगर
निगम की अनदेखी

जयपुर @ पत्रिका

patrika.com/city

बारिश के पानी को सहेजकर भूजल स्तर बढ़ाने की उम्मीद जेडीए व नगर निगम की अनदेखी की भेंट चढ़ती जा रही है। 300 वर्ग मीटर से ज्यादा क्षेत्रफल के भूखण्ड पर भवन निर्माण के दौरान रूफ टॉप रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम बनाना जरूरी है, लेकिन जयपुर में इसका पालन नहीं हो रहा। जानकारों के मुताबिक शहर में 300 वर्ग मीटर से ज्यादा क्षेत्रफल पर लाखों भवन निर्मित हैं, लेकिन रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम महज 5 से 8 फीसदी भवनों में ही बनाए गए हैं। इनमें भी कई तो शो-पीस मात्र हैं।

जेडीए और नगर निगम दोनों ही मॉनिटरिंग में फेल साबित हुए हैं। पिछले 5 वर्ष में नियमों को ताक पर रखने वाले एक भी निर्माणकर्ता से जुर्माना नहीं वसूला गया, केवल नोटिस देकर जिम्मेदारी से इतिश्री कर ली गई। यही कारण है कि मानसून में करोड़ों लीटर पानी नालों में व्यर्थ बह जाता है। भूजल विशेषज्ञों की माने तो अभी 10 प्रतिशत वर्षा जल ही जमीन में जा रहा है। यह भी स्टार्म वाटर हार्वेस्टिंग (सड़क हिस्से में बनाई संरचना) के कारण।

दिल्ली में सख्ती, यहां क्यों नहीं?

नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल ने दिल्ली में रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम नहीं बनाने पर कई अस्पताल, होटल व मॉल्स पर जुर्माना लगाया है। यहां तक कि ऐसी कई इमारतों को सील करने की हिदायत भी दे दी गई, लेकिन राजधानी में नकेल नहीं

कसने के कारण मनमानी की जा रही है। विशेषज्ञों का मानना है भूजल को बचाने के लिए यदि वर्षा जल पुनर्भरण संरचनाओं के निर्माण पर सख्ती नहीं हुई तो कुछ सालों में पानी रसातल में चला जाएगा।



@ तिलक नगर शांति पथ

यहां नहीं वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम

हवामहल बाजार स्थित नौ चौक के मंदिरश्री रामचंद्रजी। यहां देवस्थान विभाग के सहायक आयुक्त का कार्यालय, रोजगार कार्यालय, विद्यालय, शहर कांग्रेस कार्यालय व अन्य कार्यालय संचालित हैं।

लाइफ लाइन हॉस्पिटल, घोषा हॉस्पिटल, कैलिंगरी हॉस्पिटल, गौरव टावर, राजकीय चिकित्सालय सेक्टर-3 मालवीय नगर, राजकीय चिकित्सालय सेक्टर 6 मालवीय नगर।

आमेर विकास एवं प्रबंधन प्राधिकरण कार्यालय, पुरानी विधानसभा में बन रहा विश्व स्तरीय म्यूजियम, आनंद कृष्ण बिहारी मंदिर, बृजनिधि मंदिर, प्रतापेश्वर महादेव मंदिर, गोविंददेवजी मंदिर, जंतर-मंतर, हवामहल सहित विभिन्न स्मारक।

सिंधी कैम्प बस अड्डा, मानसरोवर के हीरा पथ स्थित बीएसएनएल टेलीफोन एक्सचेंज, झोटवाड़ा डिस्टेंसरी।

यहां कुछ
सही

वर्ल्ड ट्रेड पार्क, ईएचसीसी हॉस्पिटल, फोर्टिस हॉस्पिटल, रॉयल एम्पायर होटल, क्लार्क्स आमेर होटल व जीटी सेन्ट्रल।

प्रावधान : भवन विनियमों के तहत 300 वर्ग मीटर से अधिक आकार के भूखंडों पर बने भवनों में वर्षा जल पुनर्भरण संरचना का निर्माण होना चाहिए।

हकीकत : 300 से 500 वर्ग मीटर तक के भूखण्डों पर आवासीय निर्माण के लिए नक्शा अनुमोदित नहीं करने के चलते इनकी संख्या का ही पता नहीं। ऐसे में मॉनिटरिंग तो दूर की बात है।

प्रावधान : 500 से एक हजार वर्ग मीटर तक के भूखण्डों पर भवन निर्माण के नक्शे जेडीए व नगर निगम के जोन स्तर पर स्वीकृत करने का अधिकार।

हकीकत : जोन स्तर पर नक्शे स्वीकृत होने के बाद इक्का-दुक्का को छोड़कर ज्यादातर निर्माणों को देखा ही नहीं गया। वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम देखना तो दूर की बात है।

प्रावधान : एक हजार वर्ग मीटर से ज्यादा आकार के भूखण्डों के नक्शे भवन मानचित्र समिति को स्वीकृत करने का अधिकार। कमर्शियल सर्टिफिकेट जारी करने से पहले वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम की जांच सुनिश्चित हो।

हकीकत : सहायक नगर नियोजक व पीएचई शाखा के अभियंताओं के जरिए जांच करने की प्रक्रिया है, लेकिन कुछ मामलों को छोड़कर ज्यादातर में पुरख्ता जांच नहीं की जा रही। सर्टिफिकेट जारी करने के बाद वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम सही है या नहीं, इसे जांचने की व्यवस्था ही नहीं।

अमानत राशि का
दिखावा

| भूखण्ड क्षेत्रफल | अमानत राशि |
|------------------|------------|
| 300-500 | 50,000 |
| 501-750 | 75,000 |
| 751-2500 | 1,00,000 |
| 2501-4000 | 2,00,000 |
| 4001-10000 | 3,00,000 |
| 10001 से अधिक | 5,00,000 |

(भूखण्ड क्षेत्रफल वर्ग मीटर और राशि रुपए में)

(नक्शा अनुमोदन के लिए ली जाने वाली राशि में रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम के पेटे अमानत राशि भी ली जाती है। यह राशि तभी वापस होती है, जब निर्माणकर्ता सिस्टम

यहां बने हैं
पर खस्ताहाल

मिनी सचिवालय में बने रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम की पाइप लाइन जाम है। रख-रखाव नहीं होने से बारिश का पानी व्यर्थ बहता है। कलक्ट्रेट भवन में भी जीर्ण-शीर्ण हालत।

तिलक नगर शांति पथ स्थित टूटी पुलिया के पास बने पार्क और जवाहर नगर, सेक्टर 2 स्थित चित्रकूट उद्यान में वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम खस्ताहाल।

आवासन मण्डल के उप आवासन आयुक्त वृत्त द्वितीय कार्यालय भवन में हार्वेस्टिंग सिस्टम केवल दिखावा। पाइपों में कचरा भरा है।

जमीन में जमीन है पानी के लिए
जयपुर @ पत्रिका. एक ओर जेडीए व नगर निगम की अनदेखी के चलते धरती के हक का पानी नालों में बह रहा है वहीं, दूसरी ओर सिरसी रोड स्थित आनंद नगर निवासी कृष्णा यादव ने धरती को उसका हक दिलाकर मिसाल पेश की है।

सिरसी रोड स्थित
आनंद नगर निवासी
कृष्णा यादव ने पेश
की मिसाल



वे बरसात के दिनों में घर के पानी की एक बूंद को बाहर नहीं जाने देते। उन्होंने इसकी शुरुआत वर्ष 2004 में की। आज पूरी कॉलोनी के पानी को स्टार्म वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम के जरिए जमीन में भेज रहे हैं। इस पूरे प्रोजेक्ट में ढाई लाख रुपए खर्च किए हैं।

उन्होंने मकान बनने के साथ ही तीन रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम भी बनाए। अपने मकान में सफल प्रयोग के बाद कृष्णा ने कॉलोनी में उन जगहों पर रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम बनवाए, जहां बरसात में

जलभराव की समस्या रहती थी। यहां भूजल स्तर 160 फीट नीचे है, जबकि पास के ही दूसरे इलाकों में 200 फीट से ज्यादा गहराई पर भी भूजल नहीं है।

News item/letter/article/editorial published on May-14-05-2015 in the

Hindustan Times

Statesman

The Times of India (N.D.)

Indian Express

Tribune

Hindustan (Hindi)

Nav Bharat Times (Hindi)

Punjab Keshari (Hindi)

The Hindu

Rajasthan Patrika (Hindi)

Deccan Chronicle

Deccan Herald

M.P.Chronicle

A a j (Hindi)

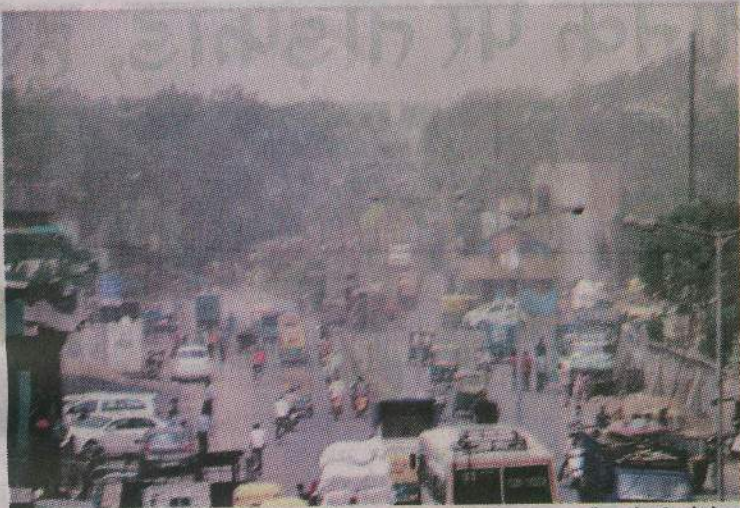
Indian Nation

Nai Duniya (Hindi)

The Times of India (A)

Blitz

and documented at Bhagirath(English)& Publicity Section, CWC.



पत्रिका

अहमदाबाद शहर में शाम को धूल भरी आंधी के साथ अचानक मौसम बदला। इस दौरान पेड़ गिरने से क्षतिग्रस्त कार।

मौसम पलटा, आंधी और फिर बारिश

अहमदाबाद @ पत्रिका

patrika.com/city

पत्रिका. राज्य के उत्तर गुजरात, सौराष्ट्र समेत कई भागों में बुधवार शाम को धूल भरी आंधी के साथ बदले मौसम के बाद तेज गर्जना के साथ बारिश हुई। आंधी और काले घने बादलों के कारण दिन में रात प्रतीत हो रही थी। जिससे वाहन चालकों को शाम करीब साढ़े चार बजे लाइट जलाकर चलना पड़ा।

अहमदाबाद व राज्य के अनेक भागों में दोपहर के बाद एकाएक मौसम में परिवर्तन हुआ। शुरुआत में धूल भरी आंधी के बाद काले घने



धीमी रोशनी होने पर वाहन के लाइट जलाते वाहन चालक।

बादल छा गए। इसके बाद तेज गड़गड़ाहट के साथ कई इलाकों में

बारिश शुरू हो गई। जिससे सेटेलाइट, वटवा, नारोल, प्रहलादनगर, सरखेज समेत विविध क्षेत्रों में सड़कों पर पानी बह निकला। अहमदाबाद जिले के धोलका एवं राजधानी गांधीनगर में भी इसी तरह का मौसम रहा। इसके अलावा अमरेली में लगातार तीसरे दिन बारिश हुई। दियोदर, पाटण, समेत सौराष्ट्र के कई भागों में तेज हवा के साथ बारिश हुई। जिसकी वजह से आम व अन्य तैयार फसलों में खासा नुकसान हुआ है। कृषि विभाग के अनुसार तेज हवा के कारण आम और बाजरे की

फसल में खूब नुकसान होने की आशंका है। हालांकि बारिश के कारण गर्मी से राहत मिली है।

फायर ब्रिगेड सतर्क

धूलभरी आंधी और बारिश को गंभीरता से लेते हुए महानगरपालिका प्रशासन ने फायरब्रिगेड को सतर्क किया था। आंधी के कारण शहर में कई जगहों पर वृक्ष टूटकर गिर गए। मौसम विभाग के अनुसार गुरुवार और शुक्रवार को भी अहमदाबाद समेत शहर के कई स्थानों में बारिश होने की संभावना है।

News item/letter/article/editorial published on May - 14.05.2015 in the

Hindustan Times
Statesman
The Times of India (N.D.)
Indian Express
Tribune
Hindustan (Hindi)

Nav Bharat Times (Hindi)
Punjab Keshari (Hindi)
The Hindu
Rajasthan Patrika (Hindi)
Deccan Chronicle
Deccan Herald

M.P.Chronicle
A a j (Hindi)
Indian Nation
Nai Duniya (Hindi)
The Times of India (A)
Blitz

and documented at Bhagirath(English) & Publicity Section, CWC.

Pre-monsoon showers hit India, but El Nino looms HT-4

WARNING Met officials say current update on weather glitch is significant

Zia Haq

■ Zia.haq@hindustantimes.com

NEW DELHI: Large parts of the India received robust pre-monsoon showers, but that is no sign, meteorologists say, that the monsoon is out of harm's way. A brewing El Nino has got substantially stronger, appearing on radars as fully formed for the first time since 2010, while a local weather pattern that can sap the monsoon is forming over the Arabian Sea.

An El Nino is a weather glitch marked by higher sea surface temperatures. Its effects can ripple around the world, from drier conditions in India to floods in Brazil.

The monsoon is critical as two-thirds of Indians depend on farm income and nearly half of the country's farmland doesn't have irrigation facilities.

Developments related to El Nino may not be all that surprising because it has been much talked about for a few months now. But to meteorologists, its current update is significant.

For the first time five years, all parameters for an El Nino have been reached.

"The Bureau of Meteorology's latest update on the El Niño-



■ Monsoon is critical as 66% of Indians depend on farming and nearly half the country's farmland doesn't have irrigation facilities. HT FILE

Southern Oscillation (ENSO) on Wednesday confirms El Niño thresholds have been reached in the tropical Pacific for the first time since March 2010," an update from the agency said. This means that although 2014 was an El Nino year, it was only weakly so.

Three of the world's top forecasters, the US Climate Prediction Centre, the Australian Bureau of Meteorology and the Japan Meteorological Agency now agree with one another that El Niño thresholds have been

reached.

Along with it, a depression-like system is taking off over the Arabian Sea, which could result in heavier pre-monsoon showers. Yet, it actually could harm the monsoon, rather than help it.

"If monsoon is to establish itself firmly in the Indian equatorial region, then this kind of a system should stop within a few days," a Met official said. Neither a good "pre-monsoon" phase nor a timely start to the monsoon guarantees steady rains in the months to follow.

News item/letter/article/editorial published on May 14.05.2015 in the

Hindustan Times

Statesman

The Times of India (N.D.)

Indian Express

Tribune

Hindustan (Hindi)

Nav Bharat Times (Hindi)

Punjab Keshari (Hindi)

The Hindu

Rajasthan Patrika (Hindi)

Deccan Chronicle

Deccan Herald

M.P.Chronicle

A a j (Hindi)

Indian Nation

Nai Duniya (Hindi)

The Times of India (A)

Blitz

and documented at Bhagirath(English)& Publicity Section, CWC.

Grain drain: Erratic rain sets 2014-15 output back by 5.5%

Annual Production Down From 265MT In 2012-'13 To 251MT

TIMES NEWS NETWORK

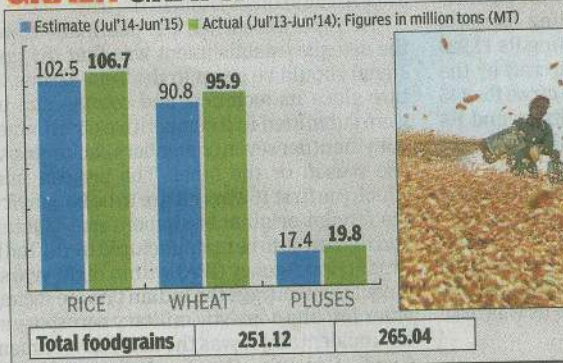
New Delhi: Last year's deficient monsoon and the spell of unseasonal rain this February-March have taken a toll on India's overall foodgrain production, pushing the total output during 2014-15 crop year (July-June) down by nearly 5.5%.

The latest government estimate, released on Wednesday, pegged the total foodgrain production during 2014-15 crop year at 251.12 million tonnes (MT), down 13.92 MT from last year's 265.04 MT.

All farm produce except sugarcane is expected to record a decline in production as compared to the output in 2013-14 crop year.

"Unseasonal rain/hailstorm during February-

GRAIN GRAPH



March 2015 had significant impact on production of Rabi crops. As a result of setback in Kharif (last year) as well as Rabi seasons (this year), the production of most of the crops in the country has declined during

2014-15," said the ministry of agriculture while releasing the third advance estimate data of foodgrain production for crop year 2014-15.

India had recorded a 12% deficit in monsoon rains during June-September

2014. The unseasonal rain and hailstorms this year dealt another blow to the agriculture sector, affecting Rabi crops over 189.81 lakh hectares across 14 states. As per the latest data, the total production of rice is estimated at 102.54 MT, which is lower by 4.11 MT than last year's record production of 106.65 MT. Production of wheat, on the other hand, is estimated at 90.78 MT which is lower by 5.07 MT than the output in 2013-14.

The total production of coarse cereals, estimated at 40.42 MT, is lower by 2.87 MT. Pegged at 17.38 MT, the output of pulses is lower 1.87 million tonnes.

Oilseed production is estimated at 27.38 million tonnes, a decrease of 5.37 million tonnes.

Hindustan Times
Statesman
The Times of India (N.D.) ✓
Indian Express
Tribune
Hindustan (Hindi)

Nav Bharat Times (Hindi)
Punjab Keshari (Hindi)
The Hindu
Rajasthan Patrika (Hindi)
Deccan Chronicle
Deccan Herald

M.P.Chronicle
A a j (Hindi)
Indian Nation
Nai Duniya (Hindi)
The Times of India (A)
Blitz

and documented at Bhagirath(English) & Publicity Section. CWC.



Yogesh Kumar

PREGNANT SKY: Although it didn't last very long, Delhiites rejoiced at the storm that hit city on Wednesday

Rain ends heat spell, Met predicts more showers

TIMES NEWS NETWORK

New Delhi: It was late by two days, but the thunderstorm that struck the city on Wednesday was welcomed by Delhiites as it sharply dropped the temperature. It also gave them the much-needed relief from the scorching heat of the past few days.

Delhi recorded 2.4mm rain between 8.30am and 5.30pm with the maximum temperature coming down two degrees below normal to 35.9 degrees Celsius.

The Met officials, who had initially predicted rain for Monday and Tuesday, said the thundersquall was a result of a western disturbance over the Jammu and Kashmir and an associated cyclonic circulation. "The WD is quite active and has resulted in thunderstorms in several parts of northwest India including Himachal Pradesh, Jammu and Kashmir, Punjab, Uttarakhand, Haryana, Rajasthan and east Uttar Pradesh. It will also continue on Thursday," said an official.

The department recorded a southwesterly squall at Safdarjung at 11.34am with a maximum wind speed of 80 kmph. There were dark clouds by 11am and strong winds too. And what started as a drizzle eventually turned into heavy rain over parts of Delhi.

Rainfall varied across the city with Narela recording the highest amount with 56 mm, while areas like Mungeshpur and Pusa not recording any rain. This is the third time in May that Delhi has recorded rain. On May 2, it recorded 0.2 mm rain, while a trace of it was recorded on May 11.

A Met official said spells of rain and thundershowers were expected on Thursday too. "There will be no significant change in maxi-



Anindya Chattopadhyay

SILVER LINING IN THE DARK CLOUD

mum temperatures over the plains of northwest India for another two days. Thunderstorms accompanied with squall may occur at one or two places over Himachal Pradesh, Uttarakhand, Punjab, Haryana and west Uttar Pradesh. Dust storm may occur at one or two places over Rajasthan. Delhi will have a partly cloudy sky that should start clearing up from Friday. Thunderstorms with rain may occur in some areas during the next two 48 hours. Squall conditions may also occur in some areas till Thursday," said the official.

News item/letter/article/editorial published on May-14.05.2015 in the

Hindustan Times
Statesman
The Times of India (N.D.)
Indian Express
Tribune
Hindustan (Hindi)

Nav Bharat Times (Hindi)
Punjab Keshari (Hindi)
The Hindu
Rajasthan Patrika (Hindi)
Deccan Chronicle
Deccan Herald

M.P.Chronicle
A a j (Hindi)
Indian Nation
Nai Duniya (Hindi)
The Times of India (A)
Blitz

and documented at Bhagirath(English)& Publicity Section, CWC.

₹20k cr to give Ganga a new lease of life

'Namami Gange' To Create Jobs For Local People

SAVE RIVER MISSION

CLEAN GANGA MISSION GETS RS 20,000-CRORE BOOST

- Money to be spent by Centre to rejuvenate Ganga in next five years (till 2020)
- Money is in addition to Rs 2,037cr which was earmarked for Ganga cleaning in 2014 budget

RS 4,000CRORE
ALREADY SPENT ON
GANGA CLEANING BY
CENTRE (1985-2015)



MONEY TO BE SPENT ON

- Pollution abatement interventions like interception, diversion and treatment of wastewater flowing through open drains, using bio-remediation/appropriate in-situ treatment/use of innovative

technologies

- Setting up new sewage treatment plants (STPs) & effluent treatment plant (ETPs). Augmentation of existing STPs
- Other immediate short-term

measures for arresting pollution at exit points on river front to prevent inflow of sewage

- Urban local bodies in 118 cities/towns to be involved Panchayats will also be involved in cleaning Ganga

- Five states — Uttarakhand, Uttar Pradesh, Bihar, Jharkhand and West Bengal - to be involved in implementation

Vishwa.Mohan@timesgroup.com

New Delhi: The government's efforts to clean and protect the Ganga on Wednesday got a big financial boost of Rs 20,000 crore which the Centre will spend to rejuvenate the national river in the next five years.

The Union Cabinet, chaired by PM Narendra Modi, approved this fund for the government's flagship programme 'Namami Gange' which was launched last year.

The Rs 20,000 crore is in addition to Rs 2,037 crore which was sanctioned by the Modi government for Ganga rejuvenation in its first budget in July last year.

'Namami Gange' is an integrated Ganga conservation mission under the National Ganga River Basin Authority of the ministry of water resources and river development. This programme is aimed at integrating efforts to clean and protect the Ganga in a comprehensive manner by involving states, urban local bodies and panchayats.

Schemes under the mission are conceived in such a way that it will involve people living on the banks of the Ganga in its cleaning exercise and maintenance, which is con-

sidered a major shift from past programmes that were based on 'top-down' approach involving only central and state government agencies. It is expected that 'Namami Gange' will also create jobs for local people.

The approval of Rs 20,000 crore for this mission is a five-fold increase over the central expenditure on Ganga cleaning in the past 29 years. The government had earlier incurred an expenditure of ap-

In an attempt to bolster enforcement, the Centre also plans to establish a 4-battalion Ganga Eco-Task Force, a Territorial Army unit

proximately Rs 4,000 crore on this task since 1986 when the then PM Rajiv Gandhi had launched the 'Ganga Action Plan' with an initial amount of Rs 462 crore. Though other agencies including state governments have also spent money on Ganga cleaning in the past three decades, the central contribution was restricted to Rs 4,000 crore over the years.

"Since the overall Ganga cleaning schemes will need more money, the government will raise additional funds by

adopting PPP model for implementing various projects including setting up of sewage treatment plants in cities and towns along the river Ganga in five states — Uttarakhand, UP, Bihar, Jharkhand and West Bengal," said an official.

The programme will be implemented by the National Mission for Clean Ganga, and its state counterparts like State Programme Management Groups. The NMCG will also establish field offices where necessary to implement various schemes.

"In order to ramp up progress, the Centre will now take over 100% funding of various activities/projects under this programme. Taking a leaf from the unsatisfactory results of the earlier Ganga Action Plans, the Centre also plans to provide for operation and maintenance of the assets for a minimum 10-year period, and adopt a PPP/SPV approach for pollution hot-spots," said an official note on the Cabinet decision.

"In an attempt to bolster enforcement, the Centre also plans to establish a 4-battalion Ganga Eco-Task Force, a Territorial Army unit, apart from contemplating a legislation that aims to check pollution and protect the river," it added.

News item/letter/article/editorial published on May - 14.05.2015 in the

Hindustan Times
Statesman
The Times of India (N.D.)
Indian Express
Tribune
Hindustan (Hindi)

Nav Bharat Times (Hindi)
Punjab Keshari (Hindi)
The Hindu
Rajasthan Patrika (Hindi)
Deccan Chronicle
Deccan Herald

M.P.Chronicle
A a j (Hindi)
Indian Nation
Nai Duniya (Hindi)
The Times of India (A)
Blitz

and documented at Bhagirath(English)& Publicity Section, CWC.

13 AFTERSHOCKS JOLT NEPAL, TOLL RISES TO 76

RESCUE WORKERS SEARCH FOR SURVIVORS FROM THE LATEST QUAKE

PRESS TRUST OF INDIA
Kathmandu, 13 May

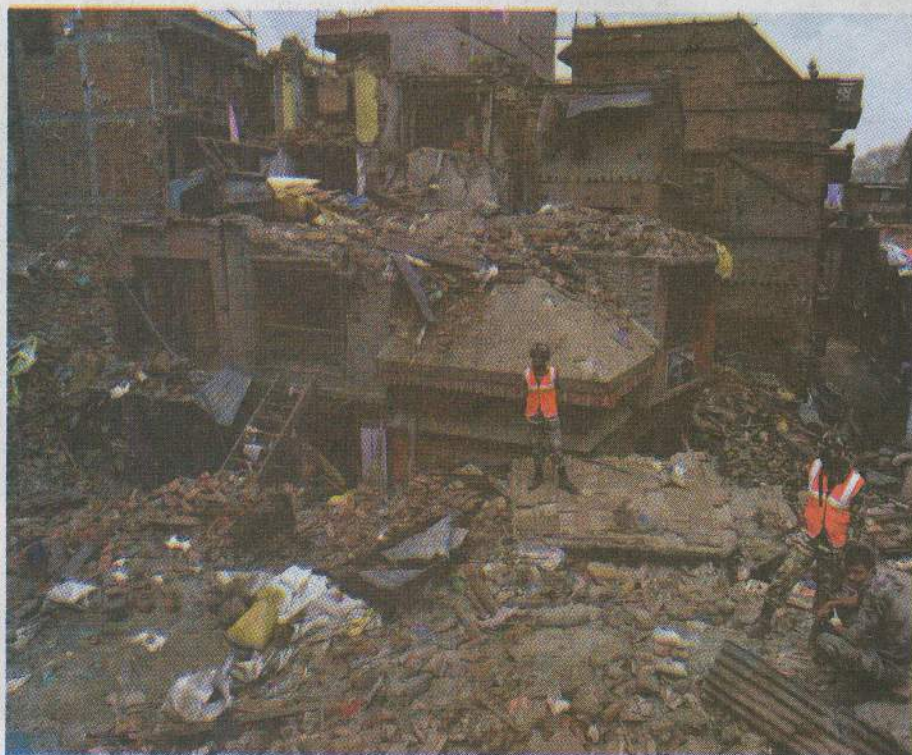
Over a dozen aftershocks jolted Nepal today, keeping people on edge a day after a powerful 7.3-magnitude earthquake killed 76 people in the Himalayan nation that had just begun to rebuild itself following the devastation from the temblor less than three weeks ago.

The fresh quake hit the hardest in remote mountainous districts in northeast of the capital city Kathmandu, bringing down buildings and triggering landslides that blocked roads to remote villages in several areas. The death toll from yesterday's earthquake has climbed to 76, while the number of injured reached 1,987, according to a Nepal Police spokesperson.

Most of the casualties were reported in Dolakha district, northeast of Kathmandu. The toll was expected to further rise.

Rescue workers are searching for survivors from the latest quake. Search is also on for a US military helicopter that was reported missing with six Marines and two Nepalese soldiers on board while delivering aid.

Security personnel rescued 9 Nepalese, an American man and a Korean woman today, airlifting them through



Nepalese and Indian Army rescue personnel observe damaged buildings following an earthquake in Bhaktapur on the outskirts of Kathmandu on Wednesday. = AFP

a helicopter from Dolakha.

Police said 32 of 75 districts were affected and several houses collapsed due to the fresh quake that was centred some 83 km east of Kathmandu near Mount Everest at a shallow depth of 15 kilometres. As

many as 13 aftershocks were reported today, most of them centred around Dolakha and Sindhupalchowk, according to Nepal Seismological Centre.

Yesterday's temblor was followed by a 6.3-magnitude aftershock 30 minutes later. A

total of 33 aftershocks struck yesterday and continued into this morning.

Thousands of fear-stricken people spent the night in the open under plastic tents barely shielding them from cold last night.

News item/letter/article/editorial published on May-14-5-2015 in the

Hindustan Times
Statesman ✓
The Times of India (N.D.)
Indian Express
Tribune
Hindustan (Hindi)

Nav Bharat Times (Hindi)
Punjab Keshari (Hindi)
The Hindu
Rajasthan Patrika (Hindi)
Deccan Chronicle
Deccan Herald

M.P.Chronicle
A a j (Hindi)
Indian Nation
Nai Duniya (Hindi)
The Times of India (A)
Blitz

and documented at Bhagirath(English)& Publicity Section, CWC.

J&K FLOODS COULD HAVE BEEN MANAGED IN BETTER WAY: PAR PANEL

Analysing the deluge

PRESS TRUST OF INDIA
New Delhi, 13 May

The unprecedented deluge in Jammu and Kashmir last year could have been managed in a "more appropriate" way, if there had been no delay in completing the pending works which have a direct bearing on management of floods in the state, a Parliamentary Panel has said.

A report of the Standing Committee on Water Resources tabled in Parliament today said, the ministry has replied that the disastrous floods of Jammu and Kashmir was due to combination of several factors, the primary being the low carrying capacity of existing Flood Spill Channel (FSC).

With passage of time the carrying capacity of existing FSC diminished



from 481.45 cumec to nearly 100 cumec.

"The Committee feel that the floods in Jammu & Kashmir though unprecedented could have been managed in a more appropriate way had there been no delay

in completing the pending works which have a direct bearing on management of floods in Jammu and Kashmir," the report said.

The Committee is pained to note that the work undertaken to

enhance the capacity under scheme 'Flood threat of river Jhelum - Urgent works' is yet to be completed to maintain the designed capacity of River Jhelum passing near Srinagar city.

Similarly, the live storage capacity of Wular Lake, which has been reduced due to siltation, needs to be enhanced in order to reduce back water effect and absorb more flood water, thereby reducing the impact of flood in its upstream areas. The Committee, therefore, (is) of the view that all works including flood spill channels regarding flood management in Jammu and Kashmir and other parts of the country should be given top priority and a time-bound programme should be formulated in consultation with the state government to complete the pending works expeditiously.

The Committee also reiterated its recommendation to bring 'water' as a subject under Concurrent List of the Constitution.

News item/letter/article/editorial published on May-14-05-2015 in the

Hindustan Times
Statesman
The Times of India (N.D.)
Indian Express
Tribune
Hindustan (Hindi)

Nav Bharat Times (Hindi)
Punjab Keshari (Hindi)
The Hindu
Rajasthan Patrika (Hindi)
Deccan Chronicle
Deccan Herald

M.P.Chronicle
A a j (Hindi)
Indian Nation
Nai Duniya (Hindi)
The Times of India (A)
Blitz

and documented at Bhagirath(English)& Publicity Section, CWC.

CABINET CLEARS 'NAMAMI GANGE'; ALLOCATES ₹20,000 CRORE

Preserve Ganga

STATESMAN NEWS SERVICE

New Delhi, 13 May

Ahead of Prime Minister Narendra Modi's three-nation tour of China, South Korea and Mongolia, the Union Cabinet today cleared a ₹20,000 crore budget for his pet Ganga cleaning and protection programme, a four-fold increase over the money spent in the last three decades for the river's conservation.

The Centre incurred an overall expenditure of approximately ₹4,000 crore on this task since

1985.

"The Union Cabinet, chaired by Narendra Modi today approved the flagship 'Namami Gange' programme which integrates the efforts to clean and protect the Ganga in a comprehensive manner," an official release said.

In 1986, then PM Rajiv Gandhi had launched the 'Ganga Action Plan', a ₹462-crore project, aiming at pollution abatement and improving the water quality.

"Drawing from past lessons, the programme also focuses on involving

the states and grassroots-level institutions such as Urban Local Bodies and Panchayati Raj Institutions for its implementation," the release said.

The programme would be implemented by the National Mission for Clean Ganga (NMCG), and its state counterpart organisations, that is, the State Programme Management Groups (SPMGs)".

Pacts with S Korea: The Cabinet also approved an Audio-Visual Co-Production Agreement between India and the Republic of Korea (RoK)

and to complete internal ratification procedure, to enable the agreement to come into force. The Agreement will be signed during the PM's South Korea visit.

The Cabinet cleared the inking of an MoU with South Korea for cooperation in the fields of maritime transport and logistics and also in the field of electric power development and new energy industries.

Pacts with Mongolia: The Cabinet cleared an MoU for cooperation in the field of Traditional

Systems of Medicine and Homoeopathy between India and Mongolia. It also cleared the signing of a MoU between India and Mongolia for cooperation in Border Guarding, Policing and Surveillance. The MoU will strengthen bilateral cooperation in the field of Border Management as both the countries' borders are porous and have difficult terrain.

Pact with China: The Cabinet cleared the signing of an MoU with China on cooperation in the field of mining and mineral sector.

News item/letter/article/editorial published on May-14.05.2015 in the

Hindustan Times
Statesman
The Times of India (N.D.)
Indian Express
Tribune ✓
Hindustan (Hindi)

Nav Bharat Times (Hindi)
Punjab Keshari (Hindi)
The Hindu
Rajasthan Patrika (Hindi)
Deccan Chronicle
Deccan Herald

M.P.Chronicle
A a j (Hindi)
Indian Nation
Nai Duniya (Hindi)
The Times of India (A)
Blitz

and documented at Bhagirath(English)& Publicity Section, CWC.

Foodgrain output declines in 2014-15

VIBHA SHARMA
TRIBUNE NEWS SERVICE

NEW DELHI, MAY 13

Deficient monsoon in 2014, unseasonal rains and hailstorms during February and March this year have taken a toll on overall foodgrain production in the country.

As per the data released by the Agriculture Ministry today, India's total estimated output during the 2014-15 crop year is set to decline by around 5.25 per cent.

India's total foodgrain production during 2014-15 crop year (July-June period) at 251.12 million tonnes (MT) is lower by 13.92 MT than the last year's record foodgrain production of 265.04 MT. For a country which is facing the prospect of another tough monsoon season during the upcoming kharif, the figures can be a cause for concern. Most of the major crops, including wheat, rice, pulses, coarse seeds and oil seeds, have registered a decline.

The ministry said "unsea-



sonal rains/hailstorm during February-March 2015 had significant impact on the production of rabi crops. As a result of setback in kharif as well as rabi seasons, the production of most of the crops in the country has declined during 2014-15".

The total production of rice is estimated at 102.54 MT, lower by 4.11 MT than the last year's record production of 106.65 MT. Estimated at 90.78 MT, the wheat production is less by 5.07 MT from

the record 95.85 MT achieved during 2013-14.

The total production of Coarse Cereals estimated at 40.42 MT is also lower by 2.87 MT than their production during 2013-14.

Pulses' production at 17.38 MT is lower by 1.87 MT recorded last year. With a decrease of 5.37 MT over the last year, oilseeds' production in the country is estimated at 27.38 million tonnes.

However, with an estimated production of 356.56 MT,

Unseasonal rain, poor monsoon to blame

■ Deficient monsoon in 2014, unseasonal rains and hailstorms during February and March this year have taken a toll on overall foodgrain production in the country

■ As per the data released by the Agriculture Ministry, India's total estimated output during the 2014-15 crop year is set to decline by around 5.25%

the sugarcane production is higher by 4.42 MT as compared to last year. The total production of cotton is estimated at 35.32 million bales (of 170 kg each), marginally lower than last year but higher by 2.85 million bales than the average production of past five years.

The production of jute and mesta is estimated at 11.49 million bales (of 180 kg each) is marginally lower than their production during the last year.

News item/letter/article/editorial published on May-14.05.2015 in the

Hindustan Times

Statesman

The Times of India (N.D.)

Indian Express

Tribune

Hindustan (Hindi)

Nav Bharat Times (Hindi)

Punjab Keshari (Hindi)

The Hindu

Rajasthan Patrika (Hindi)

Deccan Chronicle

Deccan Herald

M.P.Chronicle

A a j (Hindi)

Indian Nation

Nai Duniya (Hindi)

The Times of India (A)

Blitz

and documented at Bhagirath(English)& Publicity Section, CWC

Less snowfall in Sutlej basin sounds alarm T-14

Climate Change: Hydropower, irrigation, drinking water schemes to be hit

BHANU P LOHUMI

TRIBUNE NEWS SERVICE

SHIMLA, MAY 13

The process of climate change has started impacting the higher hills. If the declining trend of snowfall in the catchment of the Sutlej is any indication, it could have serious repercussions on the hydropower sector, irrigation and drinking water schemes in the catchment area.

The Sutlej is the longest snowfed river (320 km) flowing through Himachal, having a catchment area of 20,000 sq km, and a large number of hydro projects have come up or are under execution in the Sutlej basin.

As per the latest study conducted by scientists of the Meteorological Department, the average snowfall during winters, (November 1 to April 30) has been decreasing by an appreciable 4.1 cm annually over the past three decades.

The maximum decline in the snowfall of 2.1 cm was observed in March-April, followed by 1.3 cm in November-December and 0.7 cm in January-February. The maximum quantum of snow was received during February and March, which accounted for 56.5 per cent of the total snowfall during the season.

The study of the 30-year snowfall data of the Sutlej



The Sutlej near Shimla. PHOTO: AMIT KANWAR

catchment, conducted jointly by Dr Manmohan Singh, Dr SC Bhan, OP Singh and Rajeev Bansal, revealed that the decreasing tendency was higher in the early and late part of the season and the snowfall in the middle part was relatively stable.

All months are showing the decreasing tendency, delay in setting in and early ending of snowfall. Further, the snow season has been commencing late by 5 to 7 days per decade, showing compression in the snowfall season.

The analysis indicated that besides hydropower projects, it would have a potential adverse impact on the river flow and agricultural/horticultural production in the state and suggested extensive studies before arriving at final conclusions regarding

the impacts.

The trend is a cause for concern for power producers as the Sutlej has the highest power potential of about 11,000 mw and also the highest number of operational power projects, including, 1200 mw Karcham Wangtu, 300 mw Baspa, 1500 mw Nathpa Jhakri, 800 mw Kol Dam and 120 mw Bhabha project, have come up upstream the Bhakra Dam project.

Besides Kol Dam, all projects are run-off-the-river schemes with no storage and as such the hydropower generation will be affected during summers. The shortening of snow season will also result in a decline in quantum of snow which is stored in high hills in the shape of glaciers.

The revelations

- The average snowfall during winter (November 1 to April 30) has been decreasing by 4.1 cm annually over the past three decades
- The maximum decline of 2.1 cm snowfall was observed in March-April, 1.3 cm in November-December and 0.7 cm in January-February
- The snow season has been commencing late by 5 to 7 days per decade

The irrigation and drinking water schemes of all major towns and villages in the catchment area are based on the Sutlej and its tributaries and the shortage of water during summers for irrigation channels and drinking water would be more acute.

The receding snowfall will seriously impact the apple crop as the number of cooling days will be reduced and snow, known as white manure for apple, will not be available, horticulture experts say.

As the 70 per cent area under agriculture is rainfed and mid and lower hills reel under scorching heat in summers, the agriculture production will be badly hit in the event of delayed or deficient monsoon rain.

News item/letter/article/editorial published on May-14-05-2015 in the

Hindustan Times
Statesman
The Times of India (N.D.)
Indian Express
Tribune
Hindustan (Hindi)

Nav Bharat Times (Hindi)
Punjab Keshari (Hindi)
The Hindu
Rajasthan Patrika (Hindi)
Deccan Chronicle
Deccan Herald

M.P.Chronicle
A a j (Hindi)
Indian Nation
Nai Duniya (Hindi)
The Times of India (A)
Blitz

and documented at Bhagirath(English)& Publicity Section, CWC.

FARMER'S NOTEBOOK

Inculcating agricultural skills in younger generations

Students should be made aware about the importance of agriculture

M.J. PRABU

An ambitious programme called Mukulam from CARD-Krishi Vigyan Kendra in Pathanamthitta district has been inaugurated as an educational tool to create awareness among school children to grow crops in their school gardens as a supplemental instruction to their regular studies.

The programme, launched in the year 2010, aims to provide a platform for students for showcasing their talents in nurturing nature and building awareness of their role in contributing to the nation's food security.

Last two years

Upper primary, high school and higher secondary levels that have eco-clubs functioning for the last two years with 25-30 members each and 5-10 cents of cultivable land formed the part of the programme. The best school is awarded a cash price of Rs. 5000 and a rolling trophy and citation.

"It was conceived mainly to create awareness among school children about need for promotion of biodiversity conservation and food security. It provides an atmosphere that includes hands-on activities and strengthens academic, personal, and social skills," says Dr. C.P.Robert, Programme Coordinator at the institute.

The institute organised a variety of programmes such as seminars, students meet, quiz competition, drawing cum painting competitions and traditional food fest.

It also supported the participating schools with technology training, planting materials, seeds, organic inputs and garden tools, so that school clubs put in their



OUTSTANDING: The best school is awarded a cash price of Rs. 5000 and a rolling trophy and citation. - PHOTO: SPECIAL ARRANGEMENT

effort to develop a garden in five cents of land.

"In this five-year journey through Mukulam, we could instil a culture of safe farming among more than 10,000 families through 1,500 school children from 46 schools, who participated in this programme. The schools' eco clubs demonstrated their commitment towards the cause by working in the school garden even on holidays," explains Dr. Sindhu Sadanandan, specialist at the Kendra in charge of the project.

Garden maintenance

Besides participating in every activity, the school gardeners cultivated a variety of vegetables, fruit crops and medicinal garden — all grown organically. Club members in relay maintained the garden and attended to the plants in a scheduled manner before and after school hours.

The programme instilled a sense of responsibility in the younger generation to conserve nature and contribute to food security.

"Participating schools on an average harvested over

500 kg of vegetables, part of which was shared for school mid-day meal purpose. Besides this, the clubs also earned Rs.10,000 from the sales of vegetables each year contributing to a turnover of Rs. 4,60,000 in these five years, which added colour to the programme called earn while learning," says Ms. Sadanandan.

Eco safe programme

Seeing the success of the programme, the institute introduced eco-safe sustainable vegetable production through ultra density portable rain shelter in the schools in 2014.

"Portable rain shelter with drip irrigation system for ultra density vegetable cultivation in the schools proved to be unique for growing safe vegetables from a limited area round the year," says Ms. S. Leelamma, Headmistress of N.S.S English Medium School which bagged the first prize and won the rolling green trophy this year.

According to Mr. V. Sreejith, a teacher, "the programme is unique and inspired the children to un-

derstand need for growing healthy food without chemicals."

The programme is one of its kind with a focus on school children to enable them to acquire skill and knowledge in agriculture.

Made aware

"Programmes like this can be conducted across the several hundreds of schools across the country. Students should be made aware about the importance of agriculture and from where they get their food. If we fail in this most important task, then future of agriculture and food security is a bog question," says Dr. Robert.

For more information please contact Dr. Sindhu Sadanandan on mobile: 09946090961, email: sindhu@kvkcard.org, CARD-Krishi Vigyan Kendra-Pathanamthitta District, (Farm Science Centre, Indian Council of Agricultural Research (ICAR), Kolabhagam P.O., Tiruvalla (Via), Pathanamthitta district, Kerala, phone: 0469 2662094 and 266182, website: www.kvkcard.org

News item/letter/article/editorial published on May-14-05-2015 in the

Hindustan Times

Statesman

The Times of India (N.D.)

Indian Express

Tribune ✓

Hindustan (Hindi)

Nav Bharat Times (Hindi)

Punjab Keshari (Hindi)

The Hindu

Rajasthan Patrika (Hindi)

Deccan Chronicle

Deccan Herald

M.P.Chronicle

A a j (Hindi)

Indian Nation

Nai Duniya (Hindi)

The Times of India (A)

Blitz

and documented at Bhagirath(English)& Publicity Section, CWC.

Rain brings down mercury in state

TRIBUNE NEWS SERVICE

SHIMLA, MAY 13

The Meteorological office today warned of thunderstorms, accompanied with hailstorm or squall at isolated places tomorrow and rain or thundershowers at isolated places over the next 72 hours. Meanwhile, several parts of the state were lashed by rains today.

Poanta Sahib was the wettest with 67 mm rain, followed by Kasauli 29 mm, Sarahan 26 mm, Aghar 22 mm, Manali 21 mm, Baijnath 20 mm, Sirmaur & Bangana 17 mm each, Mehre 16 mm, Bhoranj and Kangra 15 mm each, Sundernagar and Hamirpur 14 mm each, Jhandutta, Jogindernagar and Barthin 13 mm each, Palampur and Seobag 12 mm each and Sujanpur Tira, Beer and Una 11 mm each.

The minimum temperatures decreased by one to two degrees and Keylong was the coldest at night at 6.8°C, closely followed by Kalpa 7.2°C, Manali 7.6°C,



Girls share an umbrella while walking in rain in Shimla on Wednesday. PHOTO: AMIT KANWAR

Dalhousie 12°C, Bhuntar 14°C, Shimla 14.4°C, Una 15°C, Solan 15.3°C, Dharamsala 15.8°C, Hamirpur 16°C, Sundernagar 16.7°C, Bilaspur 17.8°C and Nahan 21.5°C.

The maximum temperature increased by three to six degrees and Una was the hottest in day at 34.6°C followed by Kangra 32.1°C, Nahan, Sundernagar and Bhuntar at 31.6°C each, Dharamsala 28.2°C, Solan 26.4°C, Shimla 24.1°C and Kalpa 21°C.

Water level rises in Pandoh dam

Mandi: The district administration today sounded an alert after the water level increased in Pandoh dam.

Additional District Magistrate (ADM) Vivek Chandel said the water level in the Pandoh dam had increased due to melting of snow and the gates of the dam could be opened any time.

The ADM asked people living on the banks of the Beas to keep a vigil to avoid any untoward incident.


Central Water Commission
Technical Documentation Directorate
Bhagirath(English)& Publicity Section

725(A), North, Sewa Bhawan,
R.K. Puram, New Delhi – 66.

Dated 14/5/15

Subject: Submission of News Clippings.

The News Clippings on Water Resources Development and allied subjects are enclosed for perusal of the Chairman, CWC, and Member (WP&P/D&R/RM), Central Water Commission. The soft copies of clippings have also been uploaded on the CWC website.


14/5/15
Assistant Director (publicity)

Encl: As stated above.

Editor, Bhagirath (English) & Publicity

Director (T.D.)

For information of Chairman & Member (WP&P/D&R/R.M.), CWC and all concerned,
uploaded at www.cwc.nic.in